ये अव्यक्त इशारे

पुराने संस्कार परिवर्तन कर संस्कार मिलन की रास करो

3-10-2024

जैसे बाप के संस्कार सदा उदारचित, कल्याणकारी, निःस्वार्थ, रहमदिल, परोपकार आदि हैं। ऐसे आप बच्चों के भी संस्कार हो। सदा आपस में एकमत, स्नेही, सहयोगी बन, संस्कार मिलन करना -यही महानता है। संस्कारों का टक्कर न हो लेकिन सदा संस्कार मिलन की रास करते रहो। संस्कारों को मिलाना अर्थात् सम्पूर्णता को और समय को समीप लाना।

Transform the old sanskars and perform the dance of harmonising sanskars.

Just as the Father's sanskars are of constant generosity, of the Benefactor, selfless, merciful and of uplifting others, in the same way, you children should have the same sanskars. Always to be in unity, facing one direction, loving, co-operative and in harmony in your sanskars is greatness. Let there not be any conflict of sanskars, but constantly continue to perform the dance of the harmony of sanskars. To harmonise sanskars means to bring perfection and time close.